edudwar.com

बारहवीं ऐच्छिक												
	प्रश्नों का प्रकार	अधिगम के परिणाम तथा कौशल	अतिलघूत्तरात्मक 1 अंक	लघूत्तरात्मक 2 अंक	लघूत्तरात्मक 3 अंक	दीर्घउत्तरात्मक		दीर्घउत्तरात्मक		निबंधात्मक 10 अंक	कुल अंक	
						I 4अंक	II 5अंक	III 6अंक	IV 8 अंक		कुल अंक	प्रतिशत
1	स्मृति (ज्ञानाधारित-स्मृति के प्रयोग पर सरल प्रश्न	• श्रवण, भाषण तथा लेखन कौशल	प्र 1 ग,छ,ज,झ, ञ (5)				प्र 6 (1)				10	10
2	बोध (अर्थपूर्ण परिचित बोध पर आधारित प्रश्न)	• तर्क-वितर्क • विश्लेषणात्मक कौशल	प्र 2 क,ख,ग, ड. प्र 5 क,ख,ग,घ ड. (9)	प्र 1 क,ख,घ, च, ,ड. (5)	प्र 9 क,ख						25	25
3	अनुप्रयोग (नवीन स्थितियों में ज्ञान के अनुप्रयोग पर आनुमानिक प्रकार के प्रश्न	• रचनात्मक कौशल सार लेखन, व्याख्या करना	प्र 2 घ (1)		प्र 8 ख (1)	प्र 11 क (1)	प्र 14 ख (1)	प्र 10 प्र 12 (2)			25	25
4	उच्च स्तरीय चिन्तन कौशल (विश्लेषण एवं मूल्यांकन पर सिद्ध करना	• मूल्यांकन स्पष्टीकरण, तुलना करना, भेद करना, उचित/अनुचित आधारित प्रश्न)			प्र 8 क (1)	प्र 11 ख (1)			प्र 7 (1)		15	15
5	रचनात्मक (निर्णय अथवा स्थिति के मूल्यांकन की क्षमताएवं बहुविषयात्मक)	• मूल्यपरक विचारों की अभिव्यक्ति करना					प्र 4, 13, 14 क (3)			प्र 3 (1)	25	25
	कुल		15	5	4	2	5	2	1	1	100	100

नमूना प्रश्न पत्र

हिन्दी (ऐच्छिक) (कोड संख्या- 002)

कक्षा -बारहवीं (2014-15)

निर्धारित समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक - 100**

खंड-'क'

प्रश्न 1	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-** कहते हैं जहाँ नदी नहीं, वहाँ सभ्यता व संस्कृति नहीं पनप सकती। यहाँ एक दूसरी त्रासदी है जिस नदी के किनारे भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का विकास हुआ हो, जिस नदी को महाभारत में माँ की संज्ञा दी गई हो, जिसकों वेदों में देवी कहकर पुकारा गया हो, जिस नदी के किनारे गीता का उपदेश दिया गया हो, जो नदी भारतीय जनमानस की भावनाओं की संवाहिनी हो, आज से लगभग हजारों वर्ष पूर्व 'सरस्वती' नाम की यह नदी लुप्त हो चुकी है। ऋग्वेद में वर्णन मिलता है- एक विशाल नदी जो तीव्रता के साथ गर्जन करती हुई पर्वत से निकलकर समुद्र में विलीन होती थी, कालांतर में विलुप्त हो गई। सरस्वती नदी के किनारे जो सभ्यता एवं संस्कृति पनपी, वह आज भी प्रामाणिक तौर पर विद्यमान है। जनमानस की भावनाओं में आज भी सरस्वती उसी तरह से संचारित हो रही है। इस भव्य नदी के किनारे लगभग 10.22 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली विश्व की प्राचीन सभ्यता का जन्म हुआ। सरस्वती के उद्‌गम स्थल से लेकर अरब सागर के तट तक लगभग 1600 किलोमीटर लंबी नदी के किनारे से 6 हजार वर्ष पुराने लगभग 1200 स्थानों से अनेक पुरातात्त्विक अवशेष प्राप्त होते हैं। तत्कालीन समय में यह गर्जन करती हुई बहा करती थी। इसका उद्‌गम स्थल बंदरपूंछ उत्तराखंड था,जो हरियाणा के क्षेत्र से होती हुई राजस्थान से गुजरती हुई भाटनेर मरु भूमि में विलुप्त हो जाती थी जबकि इसकी दूसरी शाखा घग्गर के रूप में भारत में और हाकरा के रूप में पाकिस्तान में आज भी प्रवाहित होती है।	**15**
	क) सरस्वती नदी के बारे में वेद में क्या वर्णन किया गया है?	**2**
	ख) विश्व की प्राचीन सभ्यता कहाँ और कितने क्षेत्र में फैली थी?	**2**
	ग) भारतीय संस्कृति में 'सरस्वती' नदी को क्यों विशेष माना गया है?	**1**
	घ)'सरस्वती' नदी का उद्‌गम कहाँ माना जाता है और यह कहाँ विलुप्त हुई थी?	**2**
	ड़) विश्व की प्राचीन सभ्यता का जन्म किस नदी के किनारे हुआ? उस नदी की लंबाई कितनी थी?	**2**
	च) 'घग्गर' और 'हाकरा' के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।	**2**
	छ) महाभारत में किस नदी को 'माँ' की संज्ञा दी गई है? क्यों?	**1**
	ज) उक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।	**1**
	झ) 'संवाहिनी' शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।	**1**
	ञ) नदियों के किनारे ही सभ्यता और संस्कृति का विकास क्यों संभव है?	**1**

प्रश्न 2	**निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-** खोदो, हल की नोकों से खोदो धरती! यह धरती श्रम करने वालों की है, श्रम पर निर्भर रहने वालों की है, जोतो, बोओ, काटो, फसलें काटो। फसलों के ही आंगन में लक्ष्मी रमती! खोदो, हल की नोंकों से खोदो-धरती! इस धरती पर सुख की छायाएँ हैं, इस धरती पर दुख की मायाएँ हैं, श्रम का औ, सुख का भाई-चारा है, श्रम से वंचित दुखों का मारा है, ढलती , श्रम के सांचे में इच्छा ढलती! खोदो, हल की नोंको से खोदो धरती! क) धरती किसकी है? काव्यांश के आधार पर लिखिए। ख) लक्ष्मी कहाँ रमती है? कैसे? ग) दुख की माया कब प्रभावित करती है? घ) 'खोदो धरती' से क्या आशय है? ड़) काव्यांश का मूल संदेश क्या है?	5 1 1 1 1 1
	खंड- 'ख'	
प्रश्न 3	**निम्नलिखित विषयों में से किसी <u>एक विषय</u> पर निबंध लिखिए-** क) पावस ऋतु में पर्वतीय सौन्दर्य ख) राष्ट्रीय विकास में साक्षरता का योगदान ग) ''साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप'' घ) कंप्यूटर : वर्तमान काल की आवश्यकता	10
प्रश्न 4	बढ़ते आतंकवाद पर सरकार की ढुलमुल नीति की आलोचना करते हुए समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। **अथवा** दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता/प्राध्यापक के लिए आवेदन करते हुए पत्र लिखिए।	5
प्रश्न 5	**निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए-** क) मुद्रित जन संचार माध्यमों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं? ख) रेडियो किस प्रकार का माध्यम है?	5

	ग) उल्टा पिरामिड शैली से क्या तात्पर्य है? घ) इंटरनेट पत्रकारिता से क्या आशय है? ड़) जनसंचार के प्रमुख माध्यम कौन-कौन से हैं?	
प्रश्न 6	रेडियो और टेलिविजन समाचारों की भाषा शैली की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। **अथवा** समाचार लेखन में साक्षात्कार की क्या भूमिका होती है?	**5**
खंड-ग		
प्रश्न 7	**निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-** एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलो न जाए। सखि अनकर दुख दारुन रे जग के पतिआए।। मोर मन हरि हर लए गल रे अपनो मन गेल। गोकुल तेजि मधुपुर बस रे कन अपजस लेल।। विद्यापति कवि गाओल रे धनि धरू मन आस। आओत तोर मन भावन रे एहि कातिक मास।। **अथवा** गीत गाने दो मुझे तो, वेदना को रोकने को। चोट खाकर राह चलते होश के भी होश छूटे, हाथ जो पाथेय थे, ठग- ठाकुरों ने रात लूटे, कंठ रुकता जा रहा है, आ रहा है काल देखो।	**8**
प्रश्न 8	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** क) सत्य के दिखने और ओझल होने से क्या तात्पर्य है? हम सत्य की पहचान कैसे कर सकते है? 'सत्य' कविता के आधार पर लिखिए। ख) 'बनारस' कविता में प्राचीनतम शहर बनारस का चित्रण किस प्रकार किया गया है? ग) 'रहि चकि चित्रलिखी सी' पंक्ति का मर्म अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।	3+3=6
प्रश्न 9	**किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-** क) सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी। निघटी रूचि मीचु घटी हूँ घटी जगजीव जतीन की छूटी चटी। अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरूज्ञान-गटी। चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी जटी पंचबटी।।	3+3=6

	ख) श्रमित स्वप्न की मधुमाया में, गहन-विपिन की तरु-छाया में, पथिक उनींदी श्रुति में किसने- यह विहाग की तान उठाई। ग) यह प्रकृत , स्वयंभू, ब्रह्म, अयुतः इसको भी शक्ति दे दो यह दीप, अकेला, स्नेह भरा है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति दे दो।	
प्रश्न 10	**निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-** 'अपनी आँखों से जगह देखकर, अपने हाथ से चुनेहुए मिट्टी के ढेलों पर भरोसा करना क्यों बुरा है और लाखों करोड़ों कोस दूर बैठे बड़े-बड़े मिट्टी और आग के ढेलों-मंगल, शनिश्चर और बृहस्पति की कल्पित चाल के कल्पित हिसाबका भरोसा करना क्यों अच्छा है यह मैं क्या कह सकता हूँ? **अथवा** 'रूप की तो बात की क्या है। बलिहारी है इस मादक शोभा की। चारों ओर कुपित यमराज के दारुण निःश्वास के समान धधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रुद्ध अज्ञात जलस्त्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है।'	6
प्रश्न 11	निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए- क) 'प्रेमघन की छाया स्मृति' शीर्षक की सार्थकता सोदाहरण सिद्ध कीजिए। ख) प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अंतर है? पाठ '' जहाँ कोई वापसी नहीं'' के आधार पर लिखिए। ग) 'बहुरिया' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए पाठ'संवदिया' के आधार पर।	4+4=8
प्रश्न 12	'घनानंद' अथवा 'रघुवीर सहाय' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **अथवा** 'रामचंद्र शुक्ल' अथवा 'भीष्म साहनी' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषाशैली की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।	6
प्रश्न 13	**किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए-** सूरदास के चरित्र की संघर्षशीलता और सकारात्मकता आपको किस प्रकार प्रेरित करती है? विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में आप सूरदास के किस रूप को अपनाना चाहेंगे? **अथवा** लेखक अपने गाँव, अपने परिवार की गंध और स्नेह को कभी नहीं भूलता। 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर आप अपने मातापिता, अपने गाँव या शहर के प्रति अपने प्यार और आभार को व्यक्त कीजिए।	5

प्रश्न 14	क) रुप भौतिक रुप से आगे बढ़कर भी स्वयं को अपने बड़े भाई भूपसिंह के सामने बौना क्यों महसूस करता था? आरोहण कहानी के आधार पर लिखिए। ख) अपना मालवा खाऊ- उजाड़ू सभ्यता में' लेखक को मालवा में पानी की कमी, अतिवृष्टि आदि का क्या कारण दिखाई देता है? उसे क्यों लगता है कि मालवा के पर्यावरण पर भी इस आधुनिक अपसभ्यता का प्रभाव है?	**5** **5**

उत्तर संकेत

हिन्दी (ऐच्छिक) (कोड संख्या - 002)

कक्षा -बारहवीं (2014-15)

अंक विभाजन

खंड-क

1	**अपठित गद्यांश-**	
	क) विशाल नदी तीव्र गर्जन करती पर्वत से निकल समुद्र में विलीन होती थी, कालान्तर में विलुप्त हो गई।	2
	ख) सरस्वती नदी के किनारे, 10.22 वर्ग कि० मीटर क्षेत्र में फैली थी।	2
	ग) इस नदी के किनारे गीता का उपदेश दिया गया।	1
	घ) उद्‌गम स्थल- बंदरपूंछ उत्तराखंड- भाटनेर मरू भूमि में विलुप्त।	2
	ड़) सरस्वती नदी के किनारे, नदी की लंबाई- 1600 किलोमीटर	2
	च) 'घग्गर' और 'हाकरा' सरस्वती का ही भाग, भारत में 'घग्गर' के रूप में और 'हाकरा' के रूप में पाकिस्तान में आज भी प्रवाहित।	2
	छ) सरस्वती नदी को 'माँ' की संज्ञा, इसे माँ कहा गया, सभ्यता-संस्कृति का विकास।	1
	ज) सरस्वती माँ / सरस्वती नदी/ सभ्यता-संस्कृति की रक्षक/ सभ्यता-संस्कृति की पोषक।	1
	झ) उचित वाक्य प्रयोग जैसे - नदियाँ ही हमारी सभ्यता व संस्कृति की संवाहिनी है।	1
	ञ) नदियों के किनारे जीवन है, बिन पानी जीव नहीं रह सकते, वहाँ ही उनकी मूल आवश्यकताएँ पूर्ण हो पाती है। अत: सभ्यता-संस्कृति नदी किनारे विकसित होती है और पनपती है।	1
2	**अपठित काव्यांश**	
	क) जो श्रम-परिश्रम पर निर्भर होते हैं / जो परिश्रम करते है।	1
	ख) फसल के रूप में लक्ष्मी (धन) रमती है।	1
	ग) जो/जब परिश्रम न करें तब दुख की माया/ कष्ट आते रहते हैं।	1
	घ) परिश्रम करो- खेत/ धरती को जोतो, बीज बोओ, खाद-पानी पर ध्यान दो।	1
	ड़) बिना परिश्रम धन, सुख और इच्छा पूर्ण नहीं होती/ परिश्रम से ही आत्मनिर्भर बना जा सकता है और सुख प्राप्त होता है, परिश्रम और सुख की मित्रता है।	1
	अथवा	
	क) जैसे नदी की बाढ़ में सब बह जाता है ऐसे ही समय तेजी से चलता रहता है और उसके सामने बड़े से बड़े सूरमा भी झुक जाते है।	1
	ख) शरीर को बांध सकते हैं किन्तु इरादे- लक्ष्य-या जो भी करना चाहें उसे बाँधा नही जा सकता क्योंकि जब हम उस कार्य को करने की ठान लें तो उसे कोई रोक नहीं सकता।	1
	ग) गणिकों ने बालक सुभाष के जन्म के समय यह भविष्यवाणी की थी कि वह त्यागी या संन्यासी होगा। ऐसा ही हुआ क्योंकि वे जन्म से ही विलक्षण थे।	1
	घ) क्रुद्ध शेर से सुभाष की तुलना क्योंकि क्रोधित शेर को अधिक देर तक बंदी नही बना सकते।	1
	ड़) जो समय के सामने झुकते नहीं, संघर्ष करते हैं।	

	खंड- ख	
3	निबंध- क) प्रस्तावना ख) विषय वस्तु ग) भाषा की शुद्धता घ) प्रस्तुतिकरण ड़) उपसंहार	 1 5 2 1 1
4	पत्र- क) आरंभ एवं समाप्ति ख) विषयवस्तु ग) भाषा की शुद्धता	 1 3 1
5	(क) सुरक्षित रख सकते हैं, जैसे चाहे जब चाहे पढ़ सकते, चिंतन और विश्लेषण का साधन, लिखित भाषा का विस्तार होता है। (ख) श्रव्य माध्यम है, ध्वनि, स्वर और शब्दों का मेल है। (ग) लोकप्रिय और महत्वपूर्ण शैली, अत्यंत महत्वपूर्ण खबर को पहले और उसके बाद कम महत्वपूर्ण समाचार लिखा जाता है। (घ) इंटरनेट पर समाचार पत्रों को प्रकाशित करना, समाचारों का आदान-प्रदान करना। (ड.) प्रमुख माध्यम - समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, दूरदर्शन तथा इंटरनेट।	1 1 1 1 1
6	भाषा- सरल होनी चाहिए, सीधे स्पष्ट छोटे वाक्य, प्रवाहमयी - भाषा, भ्रामक शब्दों का प्रयोग नहीं उपमाओं, अनावश्यक विशेषणों का प्रयोग नहीं, प्रचलित शब्दों का प्रयोग, सभी वर्गों के लोगों को समझ आ सके - सहज भाषा।	5
	अथवा	
	महत्वपूर्ण भूमिका, एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से तथ्य, उसकी राय और अन्य विशेष जानकारी (प्राप्त) पूछता है, साक्षात्कार के लिए विषय के ज्ञान के साथ साथ पत्रकार में धैर्य, सूझबूझ, साहस, संवेदनशीलता जैसे गुण होने चाहिए, विषय की जानकारी के साथ साथ पाठक के मन के प्रश्नों - जिज्ञासाओं को समझ सकें, आवश्यक प्रश्न पूछने चाहिए।	
	खंड - ग	
7	संदर्भ - कवि, कविता प्रसंग / पूर्वापर संबंध व्याख्या - विशेष / काव्य सौन्दर्य एकसरि भवन .... कातिकमास कवि - विद्यापति, कविता - पद	½+½ 1 5 1 (कुल 8)

प्रसंग – कृष्ण का गोकुल छोड़ मथुरा में बसना,
राधा का व्यथित होना, सखी से अपना दुख बाँटती हैं।

व्याख्या –

- कृष्ण के बिना अकेलेपन से व्यथित
- दूसरों के दुख को कोई नहीं समझ सकता
- कृष्ण मेरा मन (राधा का) अपने साथ ले गए
- मेरी (राधा) की ओर ध्यान नहीं, गोकुल त्याग मथुरा बस गए
- कृष्ण को अपयश ही मिला है
- सखी आश्वासन देती है – कातिक माह में कृष्ण तुम से (राधा) से मिलेंगे।

विशेष –

- श्रृंगार रस का वियोग पक्ष
- यमक अलंकार।
- अनुप्रास अलंकार।
- मैथिली भाषा।
- सावन का महीना विरहणियों के लिए कष्टदायक माना जाता है। राधा भी अत्यधिक व्याकुल।
- व्याकुलता और दैन्य भाव

अथवा

गीत गाने ....काल देखो
कवि – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
कविता – गीत गाने दो मुझे

प्रसंग – आज मानवता का मूल्य नहीं रह गया, संघर्ष करने वाले भी असफलता का मुँह देख रहे हैं।
मानवता कराह रही है।

व्याख्या –

- कठिन समय, संघर्ष के बाद भी निराश, अतः कष्ट ही कष्ट।
- पीड़ा छिपाने के लिए कवि गीत गाना चाहता है – निराशा में आशा
- श्रम का लाभ पूँजीपति उठा रहे हैं, श्रमिक का शोषण
- अब कंठ भी अवरुद्ध, अन्याय का विरोध भी नहीं कर पा रहे हैं
- मानवता की भावना का अभाव, अस्तित्व बचाना कठिन होता जा रहा है।

	विशेष – • प्रगतिवादी • ठग – ठाकुरों में प्रतीकात्मकता • अनुप्रास अलंकार • लयबद्ध, संगीतात्मक • खड़ीबोली, उर्दू शब्दावली का असर, सरल भाषा। • वर्तमान समय की ओर संकेत – मानवता की रक्षा कठिन – अस्तित्व बचाना कठिन।	
8	किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (क) • सत्य का कोई आकार नहीं • कभी दिखाई देता है कभी ओझल हो जाता है • स्थितियों, घटनाओं के अनुसार बदलता है • सत्य आत्मा की शक्ति है • आत्मा में खोजने पर मिल सकता है • दृढ़संकल्प से प्राप्त हो सकता है (ख) • श्रद्धालुओं की भीड़ • गंगा, मंदिर, घंटों की आवाज़, उठता धुआँ, घाट, गंगा की आरती – सांस्कृतिक झाँकी • घाट पर भिखारियों का जमावड़ा, वृद्धों की भीड़ • काशी और गंगा का सानिध्य – मोक्ष प्रदान • आस्था, श्रद्धा, त्याग, विरक्ति, भक्ति, संगीत, भाईचारा, समधर्मभाव के चमत्कार का मिला जुला अद्‌भुत स्वरूप। • गंगा – घाट पर शवों का दाह संस्कार (ग) • राम के वियोग में कौशल्या चित्र में चित्रित सी • स्थिर हो गई – चित्रवत्, हिलती-डुलती तक नहीं • चकित, राम के बचपन – उनकी वस्तुओं को देख मुग्ध – भावुक • राम वन गमन याद कर चित्रवत्, भावुक मनस्थिति हो जाती है	**1½** **3** **1½** 3 **3**
9	किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य सौन्दर्य – (क) सब जाति .... पंचवटी।	3 + 3 = 6

	• पंचवटी की महिमा का वर्णन, मनोहरी चित्रण • पापों, कष्टों से मुक्ति, ज्ञान की प्राप्ति, शिव से तुलना का भाव • सात्विक वातावरण, अपार शान्ति • प्राकृतिक वैभव और सौन्दर्य • ब्रज भाषा, शांत रस • 'ट' वर्ण की आवृत्ति - वृत्यानुप्रास / अनुप्रास अलंकार • 'दुख पर दुपटी', 'अघ - ओघ' पर बेरी का, 'गुरुज्ञान' पर गटी का, 'मुक्ति' पर नटी का और 'पंचवटी' पर धूरजटी का अभेद आरोप के कारण रूपक अलंकार। • यमक अलंकार • शांत रस, सवैया छंद (ख) • देवसेना की वेदना और निराशापूर्ण स्थिति • देवसेना की स्कंदगुप्त को पाने की चाह • खड़ी बोली, देशज शब्द, तत्सम शब्द • गीत - शैली, संगीतात्मकता • श्रमित, स्वप्त और उनींदी श्रुति शब्दों में लाक्षणिक सौन्दर्य • स्मृति बिंब - साकार हो उठा है • प्रतीकात्मकता का समावेश (ग) • व्यक्ति को समाज से जोड़ना आवश्यक • समाज में विलय होने पर व्यक्ति सार्थक - उपयोगी • व्यक्ति को दीपक के रूप में प्रस्तुत • अलग-अलग भी महत्व है किन्तु समूह उसे अधिक उपयोगी, प्रभावपूर्ण बनाता है • प्रतीकात्मकता का समावेश • 'दीपक' व्यक्ति तथा पंक्ति समाज का प्रतीक • लाक्षणिकता • खड़ी बोली, तत्सम शब्दों का प्रयोग • श्लेष अलंकार - 'स्नेहभरा'		
10	गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या प्रसंग संदर्भ व्याख्या भाषा	 2 3 1	6

	‘‘अपनी आँखों ....कह सकता हूँ? पाठ – सुमिरिनी के मनके (ढेले चुन लो – लघुनिबंध) लेखक – पंडित चन्द्रकार शर्मा गुलेरी प्रसंग – अंधविश्वासों पर चोट – प्राचीन और नवीन मान्यताओं पर। व्याख्या – ● प्राचीन काल में जीवन साथी का चुनाव मिट्टी के ढेलों के आधार पर ● आज पढ़े लिखे लोग भी – जन्म कुंडली का मिलान कर चुनाव करते हैं ● वह ग्रह मंगल, शनि आदि से कोसों दूर, न कोई वहाँ गया है, न उन्हें देखा है। ● ज्योतिषी और धर्म आचार्य उनकी कल्पना कर अनुमान लगाते हैं। ● अनुमान पर भरोसा उचित नहीं। ● जिसे देखा नहीं उस पर भरोसा क्यों करें इससे अच्छे तो मिट्टी के ढेले हैं जो दिखते हैं उनका पता तो होता है। ● ढेलों का सुंदर उदाहरण, अंधविश्वास, रीति-रिवाजों पर व्यंग्य शैली में चोट।	
	अथवा	
	रूप की ....बना हुआ है पाठ – कुटज लेखक – हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रसंग – कुटज की जीवन शक्ति अपराजित है, कठिन से कठिन स्थिति में भी वह संघर्ष करता रहता है। व्याख्या – ● लेखक कुटज के रूप पर बलिहारी ● धधकती लू, भीषण गर्मी में भी हरा भरा ● अज्ञात स्रोत पाषाण के तल से जल खींच कर अपने जीवन की रक्षा करता है, सरस रहता है ● विपरीत मौसम भी जीवंत रहता है ● अपार – असीम जीवन शक्ति है ● विषम परिस्थिति का सामना करने की क्षमता ● सूखे, नीरस, कठोर आसन (धरती) पर मानो पलथी मार सबको अपनी ओर आकर्षित करता है ● कुटज में न सौन्दर्य है, न सुगंध, किन्तु सुख – दुख में समान रहने का संदेश देता है ● दृढ़ता का संदेश देता है, संघर्ष करो चाहे कैसी भी विपरीत स्थिति हो।	
11	**कोई दो प्रश्न** (क) ● सार्थक शीर्षक, (कहानी) कथावस्तु प्रेमघन के इर्द-गिर्द घूमती है ● उसके व्यक्तित्व के अनुरूप विषय वस्तु	4 + 4 = 8

	• विनोदप्रिय घटनाओं का चित्रण • प्रेमघन के व्यक्तित्व ने समवयस्क मंडली को प्रभावित किया • सूक्ष्म विवेचनात्मक गद्य शैली का प्रयोग। (ख) • प्रकृति के कारण विस्थापन – पुनर्वास का सूचक और औद्योगीकरण का विस्थापन – विनाश लीला का सूचक • प्राकृतिक आपदा – भूकंप, बाढ़ आदि लोग घर छोड़ जाते हैं, पुनः आ कर बसते हैं • औद्योगीकरण से आवास स्थल, प्रकृति, उसका परिवेश सब नष्ट होता है • उद्योगों से विकास तो होता है पर वहाँ के परिवेश पर कुप्रभाव पड़ता है सब उजड़ जाता है। • सिंगरौली इसका उदाहरण है। (ग) • बहुरिया की चारित्रिक विशेषताएँ – • बड़ी हवेली की बहू है, शादी होकर जब आई घर में सम्पन्नता थी, नौकर आदि उसे आदर देते थे। • पति की मृत्यु के बाद अकेली, भाइयों से झगड़ा, कर्ज चढ़ता गया, अकेलापन उसे और दुखी करता। • मार्मिक व्यथा, माँ को संवाद पहुँचाना, संवेदनशील, हरगोबिन पर आज भी भरोसा, वह संवदिया है, सोचती है वह आज भी उसकी बात गुप्त रखेगा। • असहाय, घर के सभी सदस्य उसके प्रति गैर ज़िम्मेदार।	
12	**अंक विभाजन** (क) जन्म, जीवन परिचय (ख) रचनाएँ (ग) काव्यगत विशेषताएँ / भाषा शैली (i) घनानंद जन्म – जीवन परिचय – सन् 1673 ई., दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के मीर मुशी, राजनर्तकी 'सुजान' पर आसक्त, सुजान की बेवफाई से निराश और दुखी, वृंदावन चले गए, निंबार्क सम्प्रदाय के वैष्णव बन गए। रचनाएँ – सुजान सागर, विरह लीला, कृपाकुंड निबंध, प्रिया – प्रसाद, प्रेम – पत्रिका, सुजान हित	2 2 2 } 6

	<u>कोई दो काव्यगत विशेषताएँ</u> ● श्रृगांर वर्णन – सुंदर, प्रेम लैकिकता से ऊपर उठाकर अलौकिक ● प्रेम के दो भाव – सुजान प्रिया के प्रति और आध्यामिक जगत के प्रति। ● कृष्ण को भी सुजान के नाम से संबोंधित किया है। ● प्रकृति प्रेमी – वृंदावन के सौन्दर्य का वर्णन, गोवर्धन की प्रकृति के अनेक आकर्षक रूप ● ब्रज भाषा, समास और लाक्षणिकता, कहावतों और मुहावरों का प्रयोग, ध्वन्यात्मक और चित्रात्मकता।	
अथवा		
	रघुवीर सहाय जन्म – जीवन परिचय सन् 1929 में लखनऊ। 1951 में अंग्रेजी साहित्य में एम. ए., कई पत्र – पत्रिकाओं में संपादन, 'जनसत्ता' में स्तंभ, 1990 में देहांत, आकाशवाणी के समाचार विभाग से जुड़े रहे। 'तार सप्तक' के कवि। रचनाएँ – सीढ़ियों पर धूप में, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, आत्महत्या के विरुद्ध, कहानी संग्रह। काव्यगत विशेषताएँ – (दो) ● सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति, समाज की समस्याओं को अनुभव करते हुए प्रस्तुत किया। ● तीखे व्यंग्य ● प्रकृति चित्रण – ग्रामीण जीवन की झलक। ● सुखात्मक और दुखात्मक दोनों पक्षों को प्रस्तुत किया। ● व्यक्तिगत दर्द को समाज में घुला देने की व्याकुलता। (ii) रामचन्द्र शुक्ल – जन्म – जीवन परिचय 1884 ई. – उ. प्र. बस्ती ज़िले के अगोना गाँव। उर्दू, अंग्रेजी और फारसी मे आरंभिक शिक्षा, स्वाध्याय द्वारा संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी हिन्दी का अध्ययन। हिन्दी शब्द सागर निर्माण में सहायक संपादक, 1941 ई. में निधन। रचनाएँ – गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, चिंतामणि (चार खंड) और रस मीमांसा। जायसी ग्रंथावली एवं भ्रमरगीत सार का संपादन किया। विशेषता / भाषा शैली – ● विवेचनात्मक, विचारशील ● व्यंग्य, विनोद, जीवंत भाषा शैली ● तत्सम शब्दों के साथ प्रचलित उर्दू शब्द भी ● सार गर्मित, विचार प्रधान, सूत्रात्मक वाक्य – रचना ● आत्मविश्वास, विचारों की दृढ़ता परिलक्षित	

अथवा		
	भीष्म साहनी – जन्म – जीवन परिचय – 1915 ई. में रावलपिंडी पाकिस्तान में। पहले घर पर शिक्षा, लाहौर से अंग्रेज़ी में एम. ए., पंजाब विश्वविद्यालय से पी. एच. डी.। सन 2003 में मृत्यु। अनुवादक भी रहे। रचनाएँ – भाग्य रेखा, पहला पाठ, भटकती राख, पटरियाँ, शोभायात्रा, पाली, डायन, निशाचर, झरोखे, तमस, बसंती, कुंती, गुलेल का खेल, माधवी आदि। भाषाशैली – • पंजाबी भाषा की झलक • संवादों का समावेश • छोटे – छोटे वाक्य किन्तु प्रभावशाली • उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग जिससे विषय में अपनत्व और आत्मीयता का समावेश।	
13	(क) • विद्यार्थी का निजी मत • सूरदास के चरित्र से प्रेरणा • सूरदास के चरित्र से क्या ग्रहण किया (ख) विद्यार्थी का निजी उत्तर	2 2
14	(क) • 11 साल पहले जब शेखर के पिता आए, रास्ता भटक गए, रूप की जरुरत पड़ी • उसने उनकी मदद की • वह समृ¼ हो गया • भूप चारित्रिक रुप से समृद्ध • भूप की परिवार के प्रति ईमानदारी व निष्ठा (ख) • तालाबों का न खुदवाना। • पठार में पानी रोकने के लिए बावड़ियाँ, तालाब, कुएँ बनवाना • धरती के तापमान का बढ़ना। • अपनी भारतीय जीवन पध्दति को भुलाना। • पश्चिम की अंधाधुंध नकल में अपने प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन।	5